

भारत में क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास

डा. सुरेश कुमार दहिया

एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास विभाग
पंडित नेकी राम शर्मा राजकीय महाविद्यालय
रोहतक हरियाणा

भारत में भारतीय स्वतंत्रता के लिए जो आन्दोलन महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाये गये वे तो महत्वपूर्ण थे ही इसके अलावा एक और वर्ग था। जो भारत माता के चरणों में अपना सब कुछ न्योछावर कर रहा था और वो था क्रान्तिकारी वर्ग। क्रान्तिकारी विचारधारा, क्रियाकलापों और आन्दोलन का एक निश्चित लक्ष्य था 'देश की स्वतंत्रता'। क्रान्तिकारी विचारधारा क्रियाकलापों का एक लम्बा और गौरवपूर्ण इतिहास है। सर्वप्रथम 1857 ई० में भारतीय जनता ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध एक साहसपूर्ण, लेकिन असफल क्रान्ति की थी। इसके अतिरिक्त 1858-80 के काल में प्रमुख रूप से तीन क्रान्तिकारी सामने आये। बहावी आन्दोलन, कूको का स्वतंत्रता आन्दोलन लेकिन वास्तव में 20वीं सदी में ही क्रान्तिकारियों का उत्कर्ष हुआ, जो बंगाल में प्रारम्भ होकर पूरे भारत में फैल गया जिसमें उ०प्र० प्रमुख था।

पूर्वी उत्तर-प्रदेश में क्रान्तिकारी गतिविधियों के प्रारम्भ होने के पूर्व ही महाराष्ट्र व बंगाल व शेष उ०प्र० में क्रान्तिकारी संगठनों के माध्यम से क्रान्तिकारी आंदोलन की धारा प्रभावित हो चुकी थी। किन्तु पूर्वी उ०प्र० में विप्लववादी दल की सीपना से क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में एक नए युग का प्रादुर्भाव हुआ। पूर्वी उत्तर प्रदेश क्रान्तिकारी आंदोलन का केन्द्र बन गया और धीरे-धीरे सम्पूर्ण उत्तर भारत इसके प्रभाव क्षेत्र में आ गया। पूर्वी उत्तर प्रदेश भी क्रांतिकारी आंदोलन की दृष्टि से महत्व रखता है विशेषकर विल्लववादी दर्शन, कार्य पद्धति, रीति-रिवाज और स्वरूप की दृष्टि से।

जहाँ तक छात्रों के योगदान की बात है तो यह स्पष्ट है कि ऐसा कोई आंदोलन नहीं था जिनमें छात्र वर्ग की सक्रिय भागीदारी न हो। इनकी जो भी कार्य प्रणाली थी वह बहुत गुप्त होती थी व बहुत योग्य व गिने-चुने नवयुवक ही क्रांतिकारियों के संगठन में शामिल होते थे। पूर्वी उ०प्र० में जो भी क्रान्तिकारी छात्र रहे हैं वे इतिहास पुरुष बन गये। इनकी संख्या थोड़ी ही है। किन्तु जब भी इतिहास लिखा जाएगा इन्ही का नाम प्रमुख होगा।

शचीन्द्र नाथ सान्याल के बनारस आने के बाद (1908 ई०) पूर्वी उत्तर प्रदेश में क्रान्तिकारी संगठन प्रारंभ हुआ। शचीन्द्रनाथ कलकत्ता से सीधे बनारस आए और बंगाली टोला हाईस्कूल में प्रवेश किए। उन्होंने कलकत्ता के अनुशीलन समिति के अनुरूप अनुशीलन समिति की स्थापना की परन्तु बंगाल के समिति से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था। यह समिति बनारस के मिसर पोखरा (लक्ष्मी कुण्ड) क्षेत्र में स्थापित था, वहाँ पर एक कमरा, एक चबूतरा व नाम के कई पेड़ थे। इस समिति के लगभग 20 सदस्य थे जिनमें अधिकतर छात्र ही थे जिसमें शचीन्द्रनाथ सान्याल, जगदीश प्रसन्न मुखर्जी, हेमचन्द्र दत्त विनायक राव कापिले, चुन्नीलाला कारमाकर, हिरण्यमण बनर्जी, जितेन्द्र मुखर्जी आदि प्रमुख थे। बंगाल सरकार द्वारा अनुशीलन समिति को अवैध घोषित कर दिये जाने पर शचीन्द्र नाथ सान्याल ने काशी की समिति का नाम बदलकर "यंग-मैन्स एसोसिएशन" रख दिया।

बंगाल की क्रांतिधारा को सम्पूर्ण उ०प्र० में फैलाने की दृष्टि से काशी सबसे उपयुक्त जगह थी एक तो यह स्थान मध्यवर्ती था। दूसरे तीर्थ स्थानों के साथ अनेक स्कूल व कालेजों का केन्द्र था। यहाँ बंगाली भी बहुत बड़ी संख्या में रहे थे इन्हीं कारणों से सान्याल ने काशी को अपना केन्द्र बनाया। इस संगठन का उद्देश्य सदस्यों का मानसिक, नैतिक व शारीरिक विकास करना था किन्तु बनारस षडयंत्र केस के कमिश्नर के अनुसार उक्त समिति का उद्देश्य राष्ट्रद्रोह का प्रचार करना था। एसोसिएशन सामाजिक कार्यों पर भी जोर देता था जिसके सदस्य मदनपुरा में एक विश्वविद्यालय चलाते थे इसके लिए वे धन-संग्रह और स्वयं-सेवकों की भर्ती करते थे। सेंट्रल हिन्दू कालेज के कई छात्र सदस्य बनाये गए। शचीन्द्र नाथ सान्याल का

क्वीन्स कालेज के छात्रों में भी घनिष्ठ सम्बन्ध था यह एक सुसंगठित संस्था थी और इसका अनुशासन कड़ा था।

इलाहाबाद में शचीन्द्रनाथ को राष्ट्रीय विद्यालय के सहयोग से जो व्यक्ति मिले उनमें बनवारी लाल भी थे। कांग्रेसी कार्यकर्ताओं में केशवदेव मालवीय से उनका परिचय हुआ। मालवीय की मदद से अन्य छात्र युवक भी सम्पर्क में आए और दल की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गई केशवदेव मालवीय का गुप, बनवारी लाल का गुप, नरेन्द्रनाथ बनर्जी उर्फ नौदू का गुप अलग-अलग कार्य कर रहे थे और एक दूसरे की गतिविधियों को नहीं जानते थे।

बनारस का काशी विद्यापीठ क्रांतिकारियों का गढ़ था। मन्मथनाथ गुप्त, प्रणवेश कुमार चटर्जी, चन्द्रशेखर आजाद वहाँ के छात्र थे और दामोदर स्वरूप वहाँ के शिक्षक थे। 1923 में वहाँ मन्मथनाथ गुप्ता 10वीं और प्रणवेश चटर्जी 9वीं कक्षा में पढ़ रहे थे। मन्मथनाथ गुप्ता ने ही प्रणवेश चटर्जी को क्रांतिकारी दल में भर्ती किया था। प्रारम्भ में गुप्त ने प्रणवेश का क्रांतिकारी साहित्य पढ़ने को दिया जिसमें मैखिनी और गौरीबाल्डी की जीवनी, बांग्लाय विल्लतवाद, कन्हाई लाल, खुदीराम, ज्योतिन्द्रनाथ आदि पुस्तकें मुख्य थी। ये दोनों प्रायः कारमाइर्कल पुस्तकालय बनारस में मिलते थे एक दिन पुस्तकालय में ही मन्मथनाथ गुप्त ने प्रणवेश का योगेश चटर्जी से परिचय कराया था। एक दो महीने बाद राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी से भी उनका परिचय कराया गया।

असहयोग आंदोलन शुरू होने के पूर्ण चन्द्रशेखर तिवारी नामक एक छात्र ने बनारस के एक कुख्यात गुण्डे की मरम्मत की थी फलस्वरूप उस छात्र के साहस से प्रभावित होकर आचार्य नरेन्द्रदेव उन्हें संस्कृत पाठशाला से हटाकर काशी विद्यापीठ ले आए। 1921 के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के कारण चन्द्रशेखर तिवारी गिरफ्तार कर आई0सी0एस0 मजिस्ट्रेट खारेघाट की अदालत में पेश किए गए। जिसका उन्होंने साहसपूर्ण सामना किया, पूछे जाने पर अपना नाम 'आजाद', पिता का नाम 'स्वाधीन' और माता का नाम 'जेलखाना' बताया था। तब से ही चन्द्रशेखर त्रिपाठी, चन्द्रशेखर आजाद के नाम से संबोधित किए जाने लगे। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान क्रांतिकारी आतंकवाद का निर्ममता से दमन किया गया। अनेक क्रांतिकारी भूमिगत हो गये, कई जेल में डाल दिये गये और कई इधर-उधर हो गये। "1920 में अंग्रेजों ने कुछ क्रांतिकारियों को आम माफी देकर रिहा कर दिया।"

"1921-22 के दौरान असहयोग आंदोलन को गति मिली। हजारों विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल-कॉज छोड़ दिए। मोती लाल नेहरू, सी0आर0 दास, सी0आर0 दास, सी0 राजगोपालाचारी और आसफ अली जैसे बहुत सारे वकीलों ने वकालत छोड़ दी। अंग्रेजों द्वारा दी गई उपाधियों को वापस लौटा दिया गया और विधान मंडलो का बहिष्कार किया गया। जगह-जगह लोगों ने विदेशी कपड़ों की होली जलाई। 1920 से 1922 के बीच विदेशी कपड़ों के आयात में भारी गिरावट आ गई। परन्तु यह तो आने वाले तूफान की सिर्फ एक झलक थी। देश के ज्यादातर हिस्से एक भारी विद्रोह के मुहाने पर खड़े थे।"

"क्रांतिकारियों को आम माफी देकर रिहा करने का मुख्य उद्देश्य यह था कि सरकार मांटैग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों को लागू करने के लिए देश में सहभावना का वातावरण बनाना चाहती थी। शीघ्र ही गांधी जी ने असहयोग आंदोलन प्रारम्भ कर दिया। इसके पश्चात् गाँधी जी, सी0आर0 दास तथा अन्य नेताओं की अपील जेल से रिहा क्रांतिकारियों में से अधिकांश असहयोग आंदोलन में सम्मिलित हो गये तथा अन्य ने अहिंसक असहयोग आंदोलन को समर्थन देने के निमित्त आतंकवाद का रास्ता छोड़ दिया।"

लेकिन गाँधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन को एकाएक स्थगित कर दिए जाने के कारण इनमें से अनेक अत्यधिक असंतुष्ट हो गये। जन आंदोलन की आंधी में सब कुछ छोड़कर असहयोग आंदोलन से जुड़ जाने के कारण वे महसूस करने लगे कि उनके साथ विश्वासघात किया गया है। इसमें से अधिकांश ने राष्ट्रीय नेतृत्व की रणनीति तथा अहिंसा के सिद्धान्त पर प्रश्न चिन्ह लगाना प्रारम्भ कर दिया तथा किसी विकल्प की तलाश करने लगे। स्वराधिकारियों के

संसदीय संघर्ष तथा परिवर्तन विरोधियों (नो पेंजर्स) के रचनात्मक कार्य भी इन युवाओं को आकृष्ट नहीं कर सके। इनमें से अधिकांश इस बात पर विश्वास करने लगे कि सिर्फ हिंसात्मक तरीके से ही स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार क्रांतिकारी आतंकवाद पुनर्जीवित हो उठा।

“बंगाल में पुरानी अनुशीलन तथा युगान्तर समितियाँ पुनः जाग उठीं तथा उत्तरी भारत के लगभग सभी प्रमुख नगरों में क्रांतिकारी संगठन बन गये परन्तु प्रमुख बात यह थी कि अब यह समझा गया कि एक अखिल भारतीय संगठन होने तथा अधिकतमक उत्तम तालमेल होने से अधिक उत्तम परिणाम निकल सकते हैं।”

“क्रांतिकारी आतंकवादी विचारधारा के सभी प्रमुख नेताओं ने असहयोग आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभायी इनमें जोगेश चन्द्र चटर्जी, सूर्यसेन, भगतसिंह, सुखदेव, चन्द्रशेखर आजाद, शिव वर्मा, भगवती चरण वोहरा, जयदेव कपूर व जतिनदास के नाम सबसे प्रमुख हैं। इस काल में क्रांतिकारी आतंकवाद की दो विभिन्न धारायें विकसित हुई— एक पंजाब, उत्तर प्रदेश तथा बिहार में तथा दूसरी बंगाल में।”

प्रमुख प्रभावकारी कारक-

1. युद्ध के पश्चात् मजदूर तथा श्रमिक संघवाद का उदय, क्रांतिकारी आतंकवादी नए उभरते हुए वर्ग की क्रांतिकारी ऊर्जा को राष्ट्रवादी क्रांति में लगाना चाहते थे।
2. 1917 की रूसी क्रांति तथा युवा सोवियत राज्य का गठन।
3. नये साम्यवादी समूहों का उदय; ये मार्क्सवादी, समाजवादी एवं दरिद्रतम श्रमिक वर्ग के हितों के पक्षधर थे।
4. क्रांतिकारियों द्वारा प्रकाशित विभिन्न पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकायें, इनमें विभिन्न क्रान्तिकारियों के त्याग एवं बलिदान का गुणगान किया गया। इसमें आत्मशक्ति, सारथी एवं बिजली का नाम उल्लेखनीय हैं।
5. उपन्यास एवं पुस्तकें जैसे— सचिव सान्याल की बन्दी जीवन तथा शरदचन्द्र चटर्जी द्वारा लिखित पाथेर दाबी प्रमुख थी। (बाद में अत्यधिक लोकप्रिय होने के कारण सरकार ने पाथेर दाबी प्रकाशन पर प्रतिबंध लगा दिया)।

अक्टूबर 1924 में अखिल भारतीय संगठन होने के उत्तम परिणाम निकल सकते हैं इसलिए क्रांतिकारी दलों का कानपुर में एक सम्मेलन बुलाया गया तथा इस क्षेत्र में क्रांतिकारी आतंकवादी गतिविधियों का संचालन मुख्य रूप से हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन या आर्मी ने किया।

“कानपुर में बुलाये गये सम्मेलन में जिसमें सचिन्द्रनाथ सान्याल, जगदीश चन्द्र चटर्जी तथा रामप्रसाद बिस्मिल जैसे— प्राचीन क्रांतिकारी नेताओं तथा भगत सिंह, शिव वर्मा, सुखदेव, भागवतीचरण वोहरा तथा चन्द्रशेखर आजाद जैसे तरुण नेताओं ने भाग लिया। इसके फलस्वरूप 1928 में भारत गणतन्त्र यमिति अथवा सेना (Hindustan Republican Association o Army) का जन्म हुआ तथा बंगाल, बिहार, यू0पी0, दिल्ली, बिहार, पंजाब, मद्रास जैसे प्रान्तों में शाखाएं स्थापित की गयी।”

काकोरी काण्ड

8 अगस्त 1925 को क्रांतिकारियों ने ट्रेने डकैती की योजना बनाई किन्तु उस दिन उनके स्टेशन पहुंचने से पूर्व ही ट्रेन जा चुकी थी अतः उल्टे पांव उन्हें लखनऊ लौटना पड़ा।

9 अगस्त को पुनः दूसरी योजना बनी निश्चय हुआ कि लखनऊ से पश्चिम की ओर जाने वाली किसी गाड़ी से अगले स्टेशन पर पहुँचा जाये और वही से 8 डाउन पैसेन्जर गाड़ी पकड़ जाये। योजना अनुसार क्रांतिकारी काकोरी स्टेशन से ट्रेन पर सवार हुए, अशफाकउल्ला खां, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, शचीन्द्रनाथ बक्शी तृतीय श्रेणी के डिब्बे में चढ़े शेष सात रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, मन्मथनाथ गुप्त, केशव चक्रवर्ती, मुरारीलाल, मुकुन्दीलाल और बनवारी लाल तृतीय श्रेणी के डिब्बों में चढ़े। सायंकाल लगभग 7.15 बजे ट्रेन काकोरी से

लखनऊ की ओर ली। अभी 1 से डेढ़ मील की दूरी तय की होगी तभी द्वितीय श्रेणी में सवार क्रांतिकारियों ने जंजीर खींच कर गाड़ी रोक दी, गाड़ी रुकते ही सभी क्रांतिकार नीचे उतर आए और अपने-अपने निश्चित कार्य पर जुट गए और 10 मिनट में ही ट्रेन को लूट लिया गया इस लूट में लगभग 5 हजार रुपया मिला। काकोरी ट्रे डकैती भारत में अपने ढंग की अपनी अनोखी घटना थी।

इसके बाद काकोरी षड्यंत्र के सिलसिले में शाहजहाँपुर में रामप्रसाद रोशन सिंह, प्रेमकृष्ण खन्ना, इन्द्रभूषण मित्र, बनारसी लाल तथा हरगोविन्द गिरफ्तार किए गए। गोविन्द चरण और राचीन्द्रनाथ विश्वास लखनऊ में पकड़े गए। भूपेन्द्रनाथ सान्याल और रामदुलारे त्रिवेदी इलाहाबाद, राजकुमार सिन्हा और सुरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य कानपुर, मन्मथनाथ गुप्त और रामनाथ पाण्डेय बनारस तथा रामकृष्ण खत्री पूना, मुकुन्दीलाल औरैया तथा प्रणवेश चटर्जी जबलपुर में गिरफ्तार हुए। इसके तीन महीने बाद राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी दक्षिणेश्वर भवन (कलकत्ता) में गिरफ्तार किए गए। लगभग 15 महीने बाद शाचीन्द्रनाथ बक्शी भागलपुर में पकड़े गए व अशफाक उल्लाह खां दिल्ली में गिरफ्तार क्रांतिकारियों पर मुकदमा चलाने के लिए उनके विरुद्ध प्रमाण जुटाने शुरू कर दिए गए। यह मुकदमा काकोरी कास्पेरेंसी केस के नाम से विख्यात हुआ।

6 अप्रैल 1927 को सेशन जज है मिल्टन ने मुकदमें का फैसला सुनाया। रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, रोशन सिंह को फांसी की सजा हुई। शचीन्द्रनाथ सान्याल को आजीवन कारावास और मन्मथनाथ गुप्त को 14 वर्ष की सजा सुनाई गयी। योगेश चन्द्र चटर्जी, मुकुन्दी लाल, गोविन्दचरण कर, राजकुमार सिन्हा व रामकृष्ण खत्री को 10,10 वर्ष की सजा हुई। विष्णु शरण दुबलिश और सुरेन्द्रचन्द्र भट्टाचार्य को 7, 7 साल भूपेन्द्रनाथ सान्याल, रामदुलारे त्रिवेदी और प्रेमकृष्ण खन्ना को 5, 5 वर्ष, प्रणवेश कुमार चटर्जी को 4 वर्ष तथा रामनाथ पाण्डेय को तीन वर्ष की सजा दी गई।

इसके तुरन्त बाद स्पेशल जज जे0आर0 डब्लू0 बैनेट ने 13 जुलाई 1927 को अशफाक उल्लाह खां को फांसी तगि शचीन्द्रनाथ बक्शी को आजीवन कारावास की सजा दी।

17 दिसम्बर 1927 को गोंडा के जले में राजेन्द्र लाहिड़ी को फांसी दे दी गई। रामप्रसाद बिस्मिल को इसी क्रम में 19 दिसम्बर 1927 ई0 को गोरखपुर जेल में फांसी दी गई। इस समय उनकी उम्र मात्र 28 वर्ष थी। रामप्रसाद बिस्मिल यह कहते हुए फांसी पर झूल गए।

सरफरोशी की तमना अब हमारे दिल में हैं।

देखना है जोर कितना बाजुएं कातिल में हैं।।

अब न अगले बदलते हैं और न अरमानों की भीड़।

एक मिट जाने की हसरज बस दिले बिस्मिल में हैं।।

आज तकतब में यह कातिल कह रहा है बार-बार।।

ये शहीदे मुल्कों मिल्लत, मै तेरे ऊपर निसार।

अब तेरी हिम्मत की चर्चा गेर की महफिर में है।।

अशफाक उल्लाह की दिलेरी को शान्त करने के लिए ब्रिटिश शासन ने 19 दिसम्बर 1927 को फैजाबाद में फांसी दे दी गई, अशफाक उल्लाह जो कि एक महान क्रांतिकारी थे उन्होंने हमेशा ही यही कथन कहा कि—

1. तंग आकर हम भी उनके जुल्म के बेदाद से।

चल दिय सुए अदम जिन्होंने फैजाबाद से।।

2. न तन हमेशा रहे शार काम और आजाद।

हमारा क्या है हम रहे, रहे न रहे।।

3. शहीदों की मजारों पर लगेगें हर बरस मेले।

वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।।

बहुत जल्द टूटेगी गुलामी की यह जंजीरे।
किसी दिन देखना आजाद यह हिंदोस्तां होगा।।

एक और महान क्रांतिकारी भी इसी दिन अपने चहेते लोगों को रोता बिलखता छोड़ गया वह महान क्रांतिकारी रोशन सिंह जिसे इलाहाबाद जेल में 19 दिसम्बर 1927 को फांसी दे दी गई। जिसने यह कहते हुए खुशी से फांसी दे दी गई। जिसने यह कहते हुए खुशी से फांसी का फंदा चूम लिया—

जिन्दगी जिन्दादिली को जान से रोशन।
वरना कितने मरे और पैदा होते जाते हैं।।

एक और महान क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद जो बच गया था उसका भी अब अंतिम समय आ गया था। 27 फरवरी 1931 को वह बहुत मनहूस दिन था जब चन्द्रशेखर आजाद ने सुखदेव राज को अल्फ्रार्क, इलाहाबाद में बुलाया था। 27 फरवरी को प्रातः ही पुलिस को आजाद व सुखदेव के पार्क में होने की सूचना मिल गई थी। चन्द्रशेखर आजाद जो हमेशा ही यही कहा करते थे कि—

टूटी हुयी बोतल है, टूटा हुआ पैमाना।
सरकार तुझे दिखा देंगे, ठाठ फकीराना।।

आजाद ब्रिटिश अधिकारियों के जाल में घिर चुके थे। टिटर्टन और हैरिस को शस्त्र पुलिस के 80 जवानों सहित 15 मिनट के अंदर पार्क को घेर लेने का आदेश मिला। शासक पुलिस ने पार्क को तीन तरफ से घेर लिया। इसी समय सीआईडी सुपरिटेन्डेंट नॉट बाकर अपनी कार से अल्फ्रेड पार्क पहुँचा। कार से उतरने के बाद कुछ आगे बढ़कर उसने आजाद पर गोली चलाई तो उसकी जांघ में लगी उस समय आजाद व सुखदेव एक जामुन के पेड़ के नीचे बैठे बातचीत कर रहे थे। तत्काल आजाद ने सुखदेव को वहाँ से भागने का संकेत दिया, सुखदेव तेजी से गोली बरसाते वहाँ से नौ-दो ग्यारह हो गए।

आजाद के ऊपर चारों तरफ से गोलियाँ बसरस रही थी और आजाद उनका डट कर मुकाबला कर रहे थे। अन्त में आजाद के पिस्तौल में सिर्फ एक गोली शेष रह गयी तो उसका उपयोग उन्होंने अपने ऊपर किया। वे सदा के लिए वही सो गए। दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे। आजाद ही रहें हैं आजाद ही मरेंगे।

इस प्रकार इन क्रांतिकारी छात्रों ने अपना बलिदान देकर स्वतंत्रता संग्राम को नया आयाम दिया। इन क्रांतिकारियों की शहादत से ब्रिटिश शासकों का भारत में टिकना मुश्किल हो गया। भारत का स्वतंत्रता इतिहास जब-जब लिखा जाएगा तो इन क्रांतिकारियों का नाम अक्षरों में लिखा जाएगा। कवि दिनकर के शब्दों में—

“दिशा दीप्त हो उठी, प्राप्त कर पुण्य, प्रकाश तुम्हारा
लिखा जा चुका, अनल अक्षरों में इतिहास तुम्हारा।।”

साण्डर्स हत्याकांड (लाहौर, दिसम्बर 1928)-

धीरे-धीरे जब हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के क्रांतिकारी विध्वंसक तथा क्रांतिकारी गतिविधियों से दूर होते जा रहे थे, उसी समय नवम्बर 1928 में शेर-ए-पंजाब लाला लाजपतराय की लाठी चार्ज से हुई मृत्यु से वे पुनः भड़क उठे।

1928 में लाहौर में साइमन कमीशन के भारत दौरे का विरोध करने हेतु एक प्रदर्शन आयोजित किया गया। प्रदर्शनकारियों का नेतृत्व लाला लाजपतराय कर रहे थे। लाहौर में सहायक पुलिस कप्तान साण्डर्स ने साइमन कमीशन के विरुद्ध प्रदर्शन कर रहे लोगों पर लाठी चार्ज का आदेश दे दिया। इसके परिणामस्वरूप लाला लाजपतराय को संघातिक चोर लगी तथा 15 नवम्बर 1928 को उनकी मृत्यु हो गयी। हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के तीन प्रमुख सदस्यों भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद तथा राजगुरु ने लाला लाजपतराय की मौत के लिये साण्डर्स को दोषी मानते हुए 17 दिसम्बर 1928 को साण्डर्स की हत्या कर दी। साण्डर्स

की हत्या को इन शब्दों द्वारा न्यायोचित करार दिया गया— “देश के करोड़ों लोगों के सम्माननीय नेता की एक साधारण पुलिस अधिकारी के क्रूर हाथों द्वारा की गई हत्या..... राष्ट्र का घोर अपमान है। भारत के देशभक्त युवाओं का कर्तव्य है कि वे इस कार्यरतापूर्ण हत्या का बदला लें..... हमें साण्डस की हत्या का अफसोस है किन्तु वह उस अमानवीय व्यवस्था का एक अंग था, जिसे नष्ट करने के लिए हम संघर्ष कर रहे हैं।”

केन्द्रीय विधानसभा में बम विस्फोट (अप्रैल 1929)-

बहरे कानों को सुनाने के लिए धमाके की जरूरत होती है। “इंकलाब जिंदाबाद!”

भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुखदेव और उनके जैसे अन्य क्रांतिकारी राष्ट्रवादी औपनिवेशिक शासन तथा अमीर शोषक वर्गों से लड़ने के लिए मजदूरों और किसानों की क्रांति चाहे थे। इस काम को पूरा करने के लिए उन्होंने 1928 में दिल्ली स्थिति फिरोजशाह कोटला में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचएसआरए) की स्थापना की थी। 17 दिसम्बर 1928 को भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद एवं राजगुरु ने लाला लाजपत राय पर लाठी चार्ज करने वाले सांडर्स नामक पुलिस अफसर की हत्या की थी। इसे लाठी चार्ज के कारण बाद में लाला लजपत राय की हत्या हो गयी थी।

अपने साथी साथी राष्ट्रवादी बी०के० दत्त के साथ भगत सिंह ने 8 अप्रैल 1929 को ‘केन्द्रीय विधान परिषद’ में बम फेंका था। क्रांतिकारियों ने अपने पर्चे में कहा था कि उनका मकसद किसी की जान लेना नहीं बल्कि “बहरो को सुनाना है” तथा विदेशी सरकार को उसके द्वारा किए जा रहे भयानक शोषण से अवगत कराना है। भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को 23 मार्च 1931 को फांसी पर चढ़ा दिया गया। उस समय भगत सिंह की आयु सिर्फ 23 साल थी।

इस खबर से पूरा देश स्तब्ध रह गया। हर जुबान पर भगतसिंह का नाम आ गया। पूरे राष्ट्र ने इस महान देशभक्तों की कुर्बानी को सरकार की कायरतापूर्ण कार्यवाही की संज्ञा दी।

दिसम्बर 1929 में चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने दिल्ली के निकट वायसराय लार्ड इर्विन की ट्रेन को जलाने का प्रयास किया। 1930 में पंजाब एवं उत्तर प्रदेश में अनेक आतंकवादी घटनायें हुईं। अकेले पंजाब में एक वर्ष में आतंकवाद की 26 घटनायें दर्ज की गयीं।

फरवरी 1931 में इलाहाबाद में एक पार्क में चन्द्रशेखर आजाद पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में गोलियों के शिकार हो गये।

बंगाल में क्रांतिकारी गतिविधियाँ-

1920 के दशक में कई क्रांतिकारी समूहों को पुनर्गठित किया गया। इन्होंने अपनी गतिविधियाँ पुनः प्रारम्भ कर दीं तथा भूमिगत कार्यवाइयाँ करने लगे। कई अन्य समूह कांग्रेस के अधीन ही कार्य करते रहे। इस प्रकार उन्होंने जनता में अपनी पैठ और व्यापक की कथा कांग्रेस को सांगठनिक आधार प्रदान किया। कस्बों तथा गाँवों में सी०आर० दास के स्वराजवादी कार्यक्रम में इन युवा क्रांतिकारियों से सक्रिय भूमिका निभायी तथा उसे व्यापक सहयोग प्रदान किया। 1925 में सी०आर० दास की मृत्यु के पश्चात् बंगाल में कांग्रेस दो धड़ों में विभक्त हो गयी एक धड़ों में विभक्त हो गयी एक धड़े का नेतृत्व अनुशीलन समिति से सम्बद्ध जे०एम० सेन गुप्ता ने किया, जबकि दूसरे धड़े का नेतृत्व युगान्तर समूह से सम्बद्ध सुभाषचन्द्र बोस के हाथों में था।

इन पुनर्गठित क्रांतिकारी समूहों ने कई आतंकवादी गतिविधियाँ सम्पन्न कीं। 1924 में कलकत्ता में बदनाम पुलिस कमिशनर चार्ल्स टेगार्ट की गोपीनाथ साहा ने हत्या करने की चेष्टा की। इसके पश्चात् सरकार ने कड़ई से क्रांतिकारियों को कुचलना प्रारम्भ कर दिया। सुभाषचन्द्र बोस सहित अनेक क्रांतिकारी गिरफ्तार कर लिए गए तथा गोपीनाथ साहा को फांसी पर चढ़ा दिया गया। सरकारी दमन तथा आपसी फूट के कारण क्रांतिकारी गतिविधियाँ धीरे-धीरे कमजोर पड़ने लगीं। किन्तु शीघ्र ही प्रमुख क्रांतिकारी पुनः सक्रिय हो गये तथा उन्होंने नये

‘विद्रोही संगठनों’ की स्थापना कर ली। इन पुनर्गठित या नवगठित क्रांतिकारी समूहों ने भी अनेक आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम दिया। इन नये ‘विद्रोही संगठनों’ में सबसे सक्रिय संगठन था चटगाँव क्रांतिकारियों का गुटा, जिसके नेता ‘सूर्यसेन’ थे।

चटगाँव शस्त्रागार लूट (अप्रैल 1930)-

एक बार पण्डित जी (चंद्रशेखर आजाद), भगवतीचरण के साथ कानपुर में मेस्टन रोड में जा रहे थे कि उनके पहचानने वाले पुलिस की सर्विस में एक व्यक्ति ने उनका पीछा किया। वे दोनों मूलगंज की ओर जाते हुए एक गली में मुड़ गए और उसके मोड़ पर जाकर ठहर गए। जब वह मुखबिर उसे मोड़ पर पहुँचा तो पण्डित जी ने उसकी छाती पर अपना पिस्तौल रखा और बोले, क्या तू अपनी मौन चाहता है। वह सकपका गया और उसकी घिघ्घी बज गयी। उसने हाथ जोड़े। पण्डित जी ने उसे उल्टा लौट जाने के लिए कहा और साथ ही यह भी कह दिया कि उसने पलट कर देखा तो पण्डित जी उसको गोली मार देंगे। उसके पश्चात् जब कभी उसने पण्डित जी को कही भी देखा, अपना मुख फेर लिया।

इस प्रकार सरकार ने सभी यत्न पण्डित जी या दल के अन्य सदस्यों को पकड़ने में असफल रहें सरकार को अधिक दुख और मलाला इस बात का था कि वे लार्ड डरबिन की ट्रे पर बम चालने वालों का पता भी न लगा सकी थी।

पण्डित जी इन दिनों मेरे साथ होस्टल में ठहर कर मेरी दवा-दारु कर रहे थे (मुझे टाइफाइड हो गया था)। वह तीन महीनों तक बाहर नहीं गए। उनसे मिलने यू0पी0 के वैशम्पायन, पंजाब से भगवतीचरण, यशपाल आदि आते रहते थे।

इन दिनों हमें विश्वस्त्र सूत्रों से पता चला कि ब्रिटिश सरकार ने चार स्काटलैण्ड के उच्च आफिसर वायसराय की ट्रेन पर बम चलाने वालों का सुराग लगाने के लिए भेजे हैं। वे चारों आफिसर मेरे होस्टल के समीप के एक बंगले में आकर ठहरे। पण्डित जी ने उनकी निगरानी आरम्भ कर दी। इस कार्य में हमें अपने होस्टल के बोधी से बहुत सहायता मिली जो उनके कपड़े भी धोता था पण्डित जी ने एक दिन विचार किया कि उन चारों को गोली से उड़ा दिया जाये। जब भगवती चरण से अनुमति ली तो उन्होंने मना कर दिया। कारण इस एक्शन से पुलिस की सरगर्मी, विशेषकर दिल्ली में, बढ़ जाती और उस समय दिल्ली और विशेषतः होस्टल में मेराक मरा दल या केन्द्र बन गया था, जिसको दल का कोई भी सदस्य छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। पण्डित जी ने इस एक्शन का ध्यान छोड़ दिया।

एक ऐसा एक्शन करो जिससे क्रांतिकारियों का सिर सारे भारत में ऊँचा उठ जाये। मेरा आशीर्वाद तुम लोगों के साथ है। वैशम्पायन के अनुसार चटगाँव में प्रद्युम्न गंगोली आजाद से कानपुर में मिले थे और आजाद ने उनको दो रिवाल्वर भी दिये थे। चूँकि यह मुलाकात मेरे होस्टल में हुयी थी और एक नहीं दो बंगाली सदस्यों ने उनसे वार्तालाप किया था और उसके पश्चात् आजाद के चरगाँव एक्शन के पश्चात् हर्ष के उद्गार मेरे ही सम्मुख प्रकट हुए थे, मैं समझता हूँ कि वैशम्पायन की सूचना का स्तर सही न था। हाँ, यह सम्भव हो सकता है कि वीरभद्र तिवारी ने आजाद का उन दोनों वीरों से मिलने का प्रबन्ध किया हो। मुझे इस सम्बन्ध में कोई भी ज्ञान नहीं है और न ही आजाद ने मुझे ऐसा कभी बताया।

अप्रैल में बंगाल के 64 युवक और युवतियों ने, जिसमें 11 वर्षीय बालक भी सम्मिलित थे, बड़ी वीरता के साथ चटगाँव आरमरी (हथियारखाने) पर धावा बोल दिया और कुछ सैनिकों को मारकर हथियार अपने अधीन कर चलते बने। वे अधिक दिन स्वाधीन न रह सके। सरकार को इस एक्शन से बहुत बड़ा धक्का लगा। वह उनके पीछे हाथ धोकर पड़ गई और उनके मारने में वायुयानों की सहायता भी ली।

पण्डित जी को जब चरगाँव के एक्शन की सूचना मिली तो वह अत्यन्त प्रसन्न हुए। मुझसे बोले, “जैसा मैंने उनसे कहा था उन्होंने कर दिखाया। काश, हम समस्त भारत में ऐसा ही एक्शन कर पाते तो अंग्रेजों की जड़े हिल जाती। खैर चटगाँव वालों ने क्रांतिकारियों के सिर सदैव के लिए ऊँचे कर दिये हैं।”

सूर्यसेन ने असहयोग आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभायी थी तथा चटगांव के राष्ट्रीय विद्यालय के शिक्षक के रूप में कार्य कर रहे थे। लोग उन्हें प्यार से मास्टर दा के नाम से पुकारते थे। क्रांतिकारी गतिविधियों से संलग्न होने के कारण 1926 से 1928 तक उन्हें दो साल की सजा हुयी थी। जेल से रिहा होने के पश्चात् वे कांग्रेस में काम करते रहे। वे चटगांव जिला कांग्रेस कमेटी के सचिव थे। वे कहा करते थे 'सहृदयता क्रांतिकारी का विशेष गुण है।' सूर्यसेन मृदुभाषी, शांत तथा लगनशील व्यक्ति थे तथा कविताओं से उन्हें बहुत लगाव था। रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा काजी नजरूल इस्लाम के वे बहुत बड़े प्रशंसक थे।

सूर्यसेन ने अपने सहयोगियों अनन्त सिंह, गणेश घोष तथा लोकीनाथ बाउल के साथ मिलकर सशस्त्र विद्रोह की योजना बनायी। इसका उद्देश्य जनता को यह बताना था कि सशस्त्र विद्रोह से शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्यवाद को जड़ से उखाड़ फेंका जा सकता है। विद्रोह की प्रस्तावित कार्यवाही में चटगाँव में दो शस्त्रागारों पर कब्जा कर युवा क्रांतिकारियों को हथियारबंद करने के निमित्त हथियारों को लूटना नगर की टेलीफोन और टेलीग्राम संचार व्यवस्था को नष्ट करना तथा चटगांव शाखा के तले 65 युवा क्रांतिकारियों द्वारा अप्रैल 1930 में शास्त्रागारों पर धावा बोल दिया। पुलिस शस्त्रागार पर सफलतापूर्वक कब्जा कर लिया गया, सूर्यसेन ने शस्त्रागार के बाहर राष्ट्रीय झंडा फहराया, क्रांतिकारी युवकों ने उन्हें सलामी दी तथा कामचालू क्रांतिकारी सरकार के गठन की घोषणा की गयी। बाद में ये समीपवर्ती गांवों में फैल गये तथा सरकारी दफ्तरों एवं सरकारी सम्पत्ति पर छापे मारे।

किन्तु शीघ्र ही सेना चटगांव पहुँच गयी तथा उसने मोर्चा संभाल लिया। सेना तथा क्रांतिकारियों में सशस्त्र संघर्ष हुआ। कई युवा क्रांतिकारी बहादुरीपूर्वक संघर्ष करते हुए शहीद हो गए। फरवरी 1933 में सूर्यसेन गिरफ्तार कर लिये गये। उन पर मुकदमा चलाया गया तथा जनवरी 1934 में उन्हें फाँसी पर लटका दिया गया। किन्तु चटगाँव काँड से जनता अत्यन्त प्रभावित हुई। इस घटना से क्रांतिकारी विचारों वाले युवकों का उत्साह बढ़ गया तथा बड़ी तादात में युवक विभिन्न आतंकवादी गुटों में शामिल होने लगे। 1930 में क्रांतिकारी गतिविधियों ने पुनः जोर पकड़ा तथा यह क्रम 1932 तक चलता रहा।

महात्मा गाँधी और क्रान्ति दल-

महात्मा गाँधी ने अपने साप्ताहिक पत्र 'यंग इण्डिया' में एक लेख बम पार्टी पर लिखा था जिसमें उन्होंने क्रांतिकारियों को बहुत कुछ भला-बुरा कहा था और उनका बुप्पदिल, गुमराह आदि के नामा से वर्णन किया था। पण्डित जी को उस लेख से बहुत दुख पहुँचा था। वह गाँधी जी के अहिंसा मार्ग से स्वाधीनता की लड़ाई लड़ रहे हैं। दोनों अपने-अपने मार्गों द्वारा एक ही ध्येय की ओर कूच कर रहे हैं। भेद केवल इतना है कि एक और कांग्रेस के लीडर 6 महीने के लिए जेल जाते हैं जहाँ जेल अधिकारी उनके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं। जेल में उनको कोई तकलीफ नहीं होती। बाहर आने पर उनको सभी से आदर-सम्मान मिलता है। बाहर या अन्दर उनको पैसे या खाने-पीने की त्रुटि नहीं होती। 6 महीने आराम के साथ जेल काटकर वे लोग लीडर बनकर निकलते हैं। दूसरी ओर क्रांतिकारियों का जीवन असुविधाओं और मुश्किलों से भरा है। खाने-पीने की कमी, रुपया पैसा पास नहीं, पहनने को मैले-कुचले कपड़े और सोने को जहाँ भी सुरक्षित स्थान मिल जाए, जीवन सदैव हथेली पर रखा हुआ, कभी भी गोली से मार दिए जाने की सम्भावना, यदि जीवित पकड़े जाए तो अजीत काल-कोठरी में पड़े सड़ना, प्रत्येक प्रकार की असुविधाओं और इन सब बातों के होते हुए भी वह केवल देश की स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए कटिबद्ध है। फिर भी उनको गाँधी बुजदिल कहे और उन्हें भला-बुरा कहे तो इसमें अधिक नासमझदारी और अन्याय क्या हो सकता है। महात्मा गाँधी साधन को बुरा वह सकते थे, साधको को नहीं। उन्होंने भगवतीचरण से गांधीजी के लेख का उत्तर लिखने के लिए कहा। यहाँ कुछ शब्द महात्मा गाँधी के विारों के सम्बन्ध में अनावश्यक नहीं होंगे।

वैसे तो कांग्रेस का जन्म 1885 में हो चुका था, परन्तु 1918 तक की कांग्रेस की गतिविधि तथा कार्य कुछ और ही रूप रखते थे। यह सत्य है कि बालगंगाधर तिलक भी उस समय कांग्रेस के नेताओं में से ही थे। परन्तु वह तो उग्र नीति का प्रचार करते थे उन्होंने ही “स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।” का नारा देश को दिया था और तिलक उस स्वराज को किसी भी प्रकार शीघ्र से शीघ्र प्राप्त करना चाहते थे। परन्तु उस समय की कांग्रेस में तिलक की आवाज नक्काशखाने में सूती की ध्वनि के समान थी, जिसको अन्य कांग्रेसी नेता तथा जनता सुनने के लिए तैयार ही नहीं थी।

सन्दर्भ

1. एस0सी0 इसमोंगर और जे0 सेलटरी : ऐन एकाउन्ट ऑफ गदर कांस्पेरेन्सी (लाहौर, 1919)
2. सुभाष चन्द्र बोष : द इण्डियन स्ट्रगल
3. सप्लीमेंटरी काकोरी कास्पीरेन्सी कैस
4. विश्वनाथ 'वैशम्पायन' : अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद
5. विश्वामित्र 'उपाध्याय' : शचीन्द्र नाथ सान्याल व उनका युग (दिल्ली 1983)
6. अग्रवाल, बालमुकुन्द : आजादी के मुकदमें, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डिया, दिल्ली, 2003
7. आर्य, गंगा प्रसाद : भारत यात्रा, शीला प्रिन्टर्स, मेरठ, 1970
8. बक्शी, एच0आर0 : इण्डियन फ्रीडम स्ट्रगल फॉर इण्डिपेण्डेस
9. चटर्जी, जोगेश चन्द्र : इन सर्च ऑफ फ्रीडम, डिस्ट्रीब्यूटर्स— के0एल0 मुखोपाध्याय कलकत्ता (प्रथम संस्करण), 1967
10. चन्द्रा, विपिन एवं अन्य— भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2003
11. चन्द्रा, विपिन— आधुनिक भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0) लि0 नई दिल्ली, 2005
12. चक्रवर्ती, तारिणी शंकर : भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन एवं उत्तर प्रदेश की हिन्दी पत्रकारिता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1986
13. देसाई, एस0आर0 : भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, मैकमिलन इण्डिया लि0, दिल्ली, 2006
14. गुप्त, मन्मथनाथ : सिर पर कफन बांधकर, पुस्तकायन प्रकाशन, दिल्ली, 1997